S.C.B. Medical College & Hospital, Cuttack

The history of S.C.B. Medical College, Cuttack dates back to the Maratha rule when a first- aid centre was started at the current location to treat sick pilgrims enroute to Puri & back during the famous Car Festival (Ratha Yatra) of Lord Jagannath.

In 1875, the Odisha Medical School was born under the tutelage of the British which subsequently became the Odisha Medical College in 1944. It was renamed as Sri Rama Chandra Bhanja Medical College in 1951 to honour the Maharaja of the then princely state of Mayurbhanj for his handsome financial contribution of Rupees One lakh and thirty thousand, a huge amount during those times. The first batch of 22 MBBS students joined in 1944 and passed in 1948, and MCI recognised the course in 1952 with retrospective effect. Post graduate courses, MD/MS was started in 1960 and post-doctoral training in Cardiology and Neurosurgery from 1981. Since then many disciplines have started post-doctoral courses. Very few medical colleges in the country can boast of this long tradition and history.

The institute stands tall among the medical colleges of the country as an outstanding example of excellence in training and patient care. Nearly 2000 trained man-power emerge from this institute annually and thousands have spanned out to different corners of the country and the world over 10 decades of its existence. It has been recognised by the then MCI as an ideal institution facilitating education and training in under-graduate, post-graduate and super-speciality subjects. Many doctors from this institution are luminaries in their respective fields. S.C.B. is a saga of brilliance in multiple fields and growing by leaps and bounds.

It has a sprawling campus of 87 acres which accommodates the medical college and hospital, the dental college, the nursing college, pharmacy wing, and the DMLT wing. It has a large academic complex that includes state-of-the-art lecture theatres, library, and auditorium besides multiple hostels for the students.

The services provided to the patients at no cost are unbelievable. It has a bed capacity of 2200, and the mega expansion plan in the offing will increase it to a staggering 5000 beds. The new complex is expected to be completed by early part of 2024 with a budget provision of 3500 crores. It is being constructed under the supervision of the government of Odisha and it will be state-of-the-art in all domains that few medical colleges in the world can boast having a world class health care facility.

There are some outstanding stand-alone services and Departments that very few medical colleges in the country can match. The Telemedicine Resource Centre is unique. It was started in 2001 with the help of ISRO and SGPGI, Lucknow. It has been catering to the needs of thousands of patients across the state, training doctors in the peripheral service and providing on-line classes to the students during the pandemic.

Research has been a growing priority of the institute. Many departments are involved in collaborative research with other national centres. There are multiple extra-mural projects supported by national funding agencies like ICMR, DBT and DST. Excellent research facilities like the MRU (Multi-disciplinary research unit) and VRDL (Viral Research and Diagnostic Laboratory), funded by the central government, have been facilitating quality research.

The Alumni Association of the Institute boasts of an outstanding galaxy of celebrity alumni who are luminaries in many disciplines across the world. Many have received accolades like Padma Bhushan, Padma Shri, Shanti Swarup Bhatnagar Award, Dr B C Roy award and Samanta Chandra Sehkar award for their outstanding contribution in the field of medical science. They provide inspiration to generations of students who graduate from this institution.

The COVID pandemic was a challenge that the institution accepted. The institution has created 4 dedicated, 600 bedded COVID Units, within the premises, with dedicated facilities for dialysis, OT for surgery, Paediatric unit and an Obstetrics and Gynaecology wing for pregnant mothers and 140 ICU beds. Over 10,000 patients have been treated since its inception.

The recent installation of 9 ECMO units by the government at S.C.B. Medical College has been a historic step. It is the largest ECMO facility in Eastern India and perhaps in the country in a Govt. hospital. Care is provided to the patients free of cost. Critical COVID-19 patients needing ECMO support, who were being air-lifted to other centres in the country, have availed this facility in this institute.

S.C.B. Medical College is not just a heritage institution that has blended with modernity. It is a sacred place for thousands of students who wish to excel, and millions of patients-mostly poor, under-privileged, and the needy, who cannot afford the high cost of modern medicine. It is indeed an institution that every citizen of the country should be proud of.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on S.C.B. Medical College & Hospital on its platinum Jubilee Celebrations.

Credits:

Stamps/FDC/Brochure	: Shri Brahm Prakash
Cancellation Cachet	: Smt. Nenu Gupta
Text	: Based on information received from the proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts





एस.सी.बी. मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, कटक
S.C.B. MEDICAL COLLEGE & HOSPITAL, CUTTACK

विवरणिका BROCHURE

एस. सी. बी. मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, कटक

एस. सी. बी. मेडिकल कॉलेज, कटक मराठा शासन के समय का है, जब भगवान जगन्नाथ की प्रसिद्ध रथ यात्रा के दौरान पुरी जाने वाले तथा वहां से वापस आने वाले बीमार तीर्थ यात्रियों के इलाज के लिए वर्तमान स्थान पर प्राथमिक उपचार शुरु किया गया था।

वर्ष 1875 में ओडिशा मेडिकल स्कूल की स्थापना अंग्रेजों के संरक्षण में की गई थी जो बाद में वर्ष 1944 में ओडिशा मेडिकल कॉलेज बन गया। वर्ष 1951 में मयूरभंज की तत्कालीन रियासत के महाराजा को उनके द्वारा उस समय की बड़ी रकम मानी जाने वाली एक लाख तीस हजार रु. का अच्छा खासा वित्तीय योगदान करने कारण उन्हें सम्मानित करने के लिए मेडिकल कॉलेज का नाम बदलकर श्री रामचंद्रज भंज मेडिकल कॉलेज कर दिया गया। वर्ष 1944 में 22 एमबीबीएस छात्रों का पहला बैच शामिल हुआ और वर्ष 1945 में पास हुआ तथा एमसीआई ने वर्ष 1952 में पूर्वव्यापी प्रभाव से पाठ्यक्रम को मान्यता दी। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम, एमडी/एमएस वर्ष 1960 में शुरु किए गए थे तथा वर्ष 1981 से कॉर्डियोलॉजी और न्यूरो सर्जरी में पोस्ट डॉक्टरल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शुरु किए गए। तब से कई विषयों में पोस्ट डॉक्टोरल पाठ्यक्रम शुरु किए गए हैं। देश में बहुत कम मेडिकल कॉलेज ही इस लंबी परम्परा और इतिहास पर गर्व कर सकते हैं।

यह संस्थान प्रशिक्षण तथा रोगियों की देखभाल के मामले में उत्कृष्टता के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में देश के मेडिकल कॉलजों में से एक है। इस संस्थान से सालाना लगभग 2000 प्रशिक्षित जन–शक्ति निकलती है तथा इसके अस्तित्व में आने के बाद 10 दशकों के दौरान हजारों जन देश तथा दुनिया के विभिन्न कोनों में फैले हुए हैं। इसे तत्कालीन एमसीआई द्वारा अंडरग्रेजुएट, पोस्टग्रेजुएट और सुपर स्पेलशियलटी विषयों में शिक्षा और प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने वाले एक आदर्श संस्थान के रूप में मान्यता दी गई है। इस संस्थान के कई डॉक्टर अपने–अपने क्षेत्र के दिग्गज हैं। एस.सी.बी. की कई क्षेत्रों में प्रतिभा की अपनी गाथा है तथा यह बहुत तेजी से विकास की ओर अग्रसर है।

इसका 87 एकड़ का विशाल परिसर है जिसमें मेडिकल कॉलेज और अस्पताल डेंटल कॉलेज, नर्सिंग कॉलेज, फार्मेसी विंग और डीएमएलटी विंग शामिल हैं। इस कॉलेज का अपना एक बड़ा शैक्षणिक परिसर है जिसमें छात्रों के लिए कई हॉस्टलों के अलावा अत्याधुनिक व्याख्यान, थिएटर, पुस्तकालय और सभागार शामिल हैं।

मरीजों को बिना किसी शुल्क के प्रदान की जाने वांली सेवाएं अविश्वसनीय है। इसकी बेड क्षमता 2200 है और आने वाले समय में मेगा विस्तार योजना के तहत इसकी बेड क्षमता को बढ़ाकर 5000 बिस्तरों तक किया जाएगा। 3500 करोड़ रुपए के बजट प्रावधान से 2024 के शुरुआती भाग में इस नए कॉम्पलेक्स को पूरा किए जाने की उम्मीद है। इसका निर्माण ओडिशा सरकार की देख–रेख में किया जा रहा है और यह सभी क्षेत्रों में अत्याधुनिक होगा तथा दुनिया के कुछ मेडिकल कॉलेज ही इस प्रकार की विश्वस्तरीय स्वास्थ्य देखभाल सुविधा होने का दावा कर सकते हैं।

इस मेडिकल कॉलेज में कुछ उत्कृष्ट ऐसी स्वतंत्र सेवाएं एवं विभाग हैं जिनकी बराबरी देश के कुछ मेडिकल कॉलेज ही कर सकते हैं। टेलीमेडिसन संसाधन केंद्र अद्वितीय है। इसकी शुरुआत 2001 में इसरो तथा एसजीपीजीआई, लखनऊ की मदद से हुई थी। यह राज्य भर के हजारों रोगियों की जरूरतों को पूरा कर रहा है, परिधीय सेवा देने के लिए डॉक्टरों को प्रशिक्षण दे रहा है और महामारी के दौरान छात्रों को ऑनलाइन कक्षाएं मुहैया करा रहा है।

अनुसंधान कार्य इस संस्थान की बढ़ती प्राथमिकता रही है। इस संस्थान के अनेक विभाग अन्य राष्ट्रीय केंद्रों के साथ परस्पर अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। यहाँ आईसीएमआर, डीबीटी और डीएसटी जैसी राष्ट्रीय वित्त पोषित एजेंसियों द्वारा समर्थित कई एक्सट्रा–म्यूरल परियोजनाएं भी चलती रहती हैं। इस संस्थान की विभिन्न उत्कृष्ट अनुसंधान इकाइयां जैसे एमआरयू (मल्टी–डिसिप्लिनरी रिसर्च यूनिट) और वीआरडीएल (वायरल रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक लेबोरेटरी) को केंद्र सरकार से वित्तीय सहायता प्राप्त होती है और यहाँ उच्च गुणवत्ता का अनुसंधान कार्य किया जाता है।

इस संस्थान के पूर्व–छात्रों के समूह में अनेक प्रतिष्ठित छात्र–छात्राएं शामिल हैं, जो दुनिया भर में कई विषयों के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। उनमें से कई लोगों को चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए पद्मभूषण, पद्मश्री, शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार, डॉ. बी सी रॉय पुरस्कार और सामंत चंद्र शेखर पुरस्कार जैसे सम्मान प्राप्त हुए हैं। वे इस संस्थान से स्नातक की शिक्षा पा रहे छात्रों की पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

संस्था ने कोविड महामारी को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। संस्थान ने परिसर के भीतर, 600 बिस्तर वाली 4 समर्पित कोविड इकाइयाँ बनाई हैं जो डायलिसिस के लिए समर्पित सुविधाओं, सर्जरी के लिए ऑपरेशन थिएटर, बाल चिकित्सा इकाई और गर्भवती माताओं के लिए एक प्रसूति और स्त्री रोग विंग और 140 आई सी यू बेड से युक्त है। इसकी स्थापना के बाद से अब तक 10,000 से अधिक रोगियों का इलाज किया जा चुका है।

एस.सी.बी. मेडिकल कॉलेज में सरकार द्वारा हाल ही में 9 ईसीएमओ यूनिट की स्थापना एक ऐतिहासिक कदम है। यह पूर्वी भारत में और शायद देश के किसी भी सरकारी अस्पताल में उपलब्ध विशालतम ईसीएमओ सुविधा है। यहाँ मरीजों की निःशुल्क देखभाल की जाती है। ईसीएमओ सहायता की आवश्यकता वाले गंभीर कोविड–19 रोगियों, जिन्हें देश के अन्य केंद्रों में एयर–लिफ्ट किया जा रहा था, ने इस संस्थान में इस सुविधा का लाभ उठाया।

एस.सी.बी. मेडिकल कॉलेज सिर्फ एक विरासती संस्थान नहीं है जिसने स्वयं को आधुनिकता के अनुसार ढाला है, बल्कि यह एक ऐसा पावन स्थल है, जहां एक ओर उत्कृष्टता प्राप्त करने के इच्छुक हजारों छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर ऐसे लाखों मरीज अपना इलाज करवा रहे हैं, जो गरीब, वंचित तथा जरूरतमंद हैं कि आधुनिक चिकित्सा की उच्च लागत वहन नहीं कर सकते हैं। यह वास्तव में एक ऐसी संस्था है जिस पर देश के प्रत्येक नागरिक को गर्व होना चाहिए।

डाक विभाग एस.सी.बी. मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के प्लैटिनम जयंती समारोह पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका : श्री ब्रह्म प्रकाश

विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सूचना के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	302980
Stamps Printed	:	302980
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00